AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 03 | Issue 06 | July 2022| *www.agpegondwanajournal.co.in* | Page No. 19-24

आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री अस्मिता के स्वर

डॉ.सुनीता सिंह मरकाम
सहा.प्राध्यापक, हिन्दी
शास .इंदिरा गाँधी गृह विज्ञान कन्या स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, शहडोल (मध्य प्रदेश)

~~~~~~

कहते हैं किताबें इंसान की सच्ची दोस्त होती हैं बात में दम है ऐसे वक्त में जब साया भी साथ छोड़ देता है वह आपका साथ नहीं छोडती है I किताबें आपको जीवन का उद्देश्य तलाश करने में मदद करती है.हिंदी साहित्य में महिलाओं की भागीदारी और योगदान महत्वपूर्ण रहा है। आजादी के दौरान ज्यादातर साहित्य में देश प्रेम की भावना दिखती थी उषा देवी मित्रा, सरोजनी नायडू, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि.

भारत कोकिला के नाम से प्रसिद्ध सरोजिनी नायडू का मानना था की भारतीय नारी कभी भी कृपा पात्र नहीं रही,वह सदैव समानता की अधिकारी रही है। कांग्रेस प्रमुख चुने जाने के बाद उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहां था,'' अपने विशिष्ट सेवकों में मुझे मुख्य स्थान के लिए चुनकर आपने कोई विशेष उदाहरण नहीं दिया है। आप तो केवल पुरानी परंपरा की और लौटे हैं और फिर से भारतीय नारी को उसके उस पुरातन स्थान पर ला खड़ा किया है जहां वह कभी थी' नए परिवेश में पुरुष के साथ बराबरी से कंधा मिलाकर चलने, पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों में बदलाव के साथ व्यक्तिक चेतना ने महिला साहित्य में एक नए स्वर को जन्म दिया। अमृता प्रीतम, शिवानी, कृष्णा सोबती, निरुपमा सेवती,मेहरून्निसा परवेज,नासिरा शर्मा,ममता कालिया, मनीषा कुलश्रेष्ठ,वंदना राग ,अनामिका आज के लेखन ने नारी मूल्यों को नए सिरे से गढ़ा और एक नई पहचान दी।

स्त्री विमर्श एक ऐसा आंदोलन है जो पुरुष प्रधान समाज में नारी द्वारा अपने स्वाभिमान, अधिकार, स्वतंत्रता वह अस्मिता की तलाश में जारी एक संघर्ष को दिखाता है वैदिक काल में कन्या और पुत्र में भेद नहीं था। यह भेद बाद में पैदा हुआ। पुरुष और स्त्री सामाजिक सिक्के के दो पहलू हैं, जो एक दूसरे के पूरक है। आज की स्त्री ने

CORRESPONDING AUTHOR:	REVIEW ARTICLE

Dr. Sunita Singh Markam
Asst. Professor of Hindi,
Govt. Indira Gandhi Home Science Girls PG College, Shahdol, Madhya Pradesh
Email: sunitasingh2779@gmail.com
~~~~~~

अपनी शक्ति को पहचानना शुरू कर दिया है। जिसके कारण पुरुष वर्चस्व वाला समाज भयातीत हो गया है। पुरुष प्रधान समाज में बड़ी चालाकी पूर्वक नारी को संपत्ति और सत्ता के उत्तराधिकार से वंचित कर दिया गया था। समाज में रूढ़ियां इस इस कदर बढ़ गई थी की कन्या का जन्म बोझ बन गया था। उससे जीने का अधिकार तक छिन गया था।

तस्लीमा नसरीन के अनुसार-'स्त्री को डराना और लज्जालु होना पुरुष प्रधान समाज ने सिखाया है, क्योंकि भयभीत एवं लज्जालु रहने पर पुरुषों को उस पर अधिकार जताने में सुविधा होती है। इसलिए डर और लज्जा को 'स्त्री कहा जाता है' आचार्य रामचंद्र शुक्ल प्रगतिशील विद्वान के इस दृश्य से मुक्त नहीं हो पाए- 'जो शिक्षा स्त्रियों को मेम व निर्लज्ज बना दे वह शिक्षा नहीं वरन कुशिक्षा है। स्त्री का मुख्य उद्देश्य नम्र, सहिष्णु, और शांत बनना,गृह कार्य में दक्ष रहना तथा उचित अनुचित का ज्ञान पैदा करना है। जो शिक्षा निर्लज्ज बनाती है, उसके हम विरोधी हैं।

पश्चिमी देशों में नारी को घर से बाहर लाने में औद्योगिक क्रांति का बहुत बड़ा हाथ है। अब स्त्री लेखिकाएं अपने अस्तित्व, अस्मिता के बारे में सोचने लगे हैं अपने शरीर पर अंकित असंख्य बेड़ियों के निशानों घाओं को भी पहचाने लगी हैं। जब गुलाम में अपनी बेड़ियों का एहसास पैदा हो जाता है तो वह अपनी बेड़ियां काट लेता है ठीक यही बात स्त्रियों पर भी लागू होती है, जिस दिन स्त्रियां अपनी गुलामी की असंख्य,अदृश्य बेड़ियों, जंजीरों को पहचान लेंगी तो वह दिन भी दूर नहीं जब वे पैतृक जकड़बंदी से मुक्त होकर अपने अधिकारों के बारे में सोचेंगी।

मीराबाई और महादेवी वर्मा का उदाहरण भी हमारे सामने है जिन्होंने समाज के बन्धनों को तोड़कर सड़कों पर भक्ति गीत गाए और हमारे लिए कविता और संगीत की एक समृद्ध वसीयत छोड़ी.स्त्री की अस्मिता को केंद्र में लाने का श्रेय महिला आंदोलनों को जाता है महिला आंदोलन के संघर्ष और कुर्बानियों का ही नतीजा है कि स्त्रियां आज गर्व के साथ अपने हक की लड़ाई लड़ रही हैं।

किसी भी समाज के सामाजिक व्यवस्था के समाज की उन्नति- अवनति का कारण महिला होती है।- एक जमाना था स्त्रियां चुप थी। आज स्त्री ने चुप्पी तोड़ने का बीड़ा उठा लिया है महिलाओं के लिए काम के अनेक क्षेत्रों को ना सिर्फ खोल दिया गया है बल्कि 24 घंटे सुरक्षा के साथ वे कार्य करती हैं। निश्चित तौर से आज महिलाएं स्वतंत्र हैं, आर्थिक रूप से सशक्त हैं, दृढ़ संकल्प से लैस है, सुरक्षा का भाव और हर क्षेत्र में बराबरी के साथ अपनी प्रतिभा व हुनर की छमता दिखाने का साहस कर पा रहे हैं, तो उसकी बड़ी वजह दशकों से चली आ रही लड़की या महिला को कमतर मानने की सोच में आया बदलाव है, प्रमुख महिला साहित्यकारों ने हिंदी साहित्य में स्त्री अस्मिता के स्वरों को उठाया है हिंदी साहित्य के आरंभ में नारी काव्यकारों और कथाकारों के लिए सम्मान और करुणा का विषय रही और रूढ़िवादी,परंपरावादी, साहित्यकारों ने तो उसके हर नए कदम की भर्त्सना की, किंतु प्रेमचंदोत्तर काल में साहित्यकारों की धारणा में परिवर्तन हुआ। नारी ने जब करवट लेकर आंख खोली और अपने पैरों पर खड़े होकर नई राहों की तलाश की तो साहित्यकारों को भी उसके पीछे चलने के लिए विवश होना पड़ा. महिला कथा कारों में- कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, अमृता प्रीतम, ममता कालिया, नासिरा शर्मा प्रभा खेतान आदि।

हिंदी साहित्य में आधुनिक महिला साहित्यकारों ने हमेशा अपने लेखन से महिला शक्ति को एक मजबूत आवाज भी है। आज भी महिला लेखन में स्त्री वर्ग की शिकायतें, उसके प्रकट और अप्रकट का क्रोध, छुपे हुए आक्रोश, तथा जीवन के प्रति उसके विशिष्ट दृष्टिकोण, रोजमर्रा की जिंदगी, निधि घटनाओं का सटीक वर्णन जितना महिला लेखन में प्रस्तुत किया जा सकता है उतना पुरुष लेखन में नहीं।

अमृता प्रीतम ने अपने साहित्य का आरंभ कविताओं से किया था। कहने का मतलब यह है कि अमृता जी केवल बौद्धिक ढंग से नहीं लिखते हैं, उनके शब्द केवल दिमाग से ही नहीं निकलते हैं बल्कि उनके हृदय की अनुभूत भी रहती है। अमृता जी ने कविताएं ही नहीं लिखी वरण अनेकों उपन्यास एवं कहानियां भी लिखें। अमृता प्रीतम ने नारी मन की आंतरिक घुटन अवसाद और मानसिक बंद को उन्होंने वाडी दी है। अमृता प्रीतम के कथा साहित्य मैं ऐसे अनेकों उदाहरण भरे हुए हैं उनकी नारियां आधुनिक मीरा है या राधा और एकनिष्ट प्यार उनके व्यक्तित्व का पर्याय ही बन गया है अमृता प्रीतम प्रेम के समक्ष किसी भी सामाजिक परंपरा एवं बंधन को नहीं स्वीकारती हैं । अमृता प्रीतम के उपन्यासों के नारी पात्र विवाह संबंधों को जब तक कायम रख सकते हैं तब तक रख सकते हैं, लेकिन जैसे ही उनमें हल्की सी दरार पड़ती है तो वह अलग हो जाते हैं, उनके उपन्यासों में तलाक बहुत कम ही जगह दृष्टिगत हुए हैं ‘ एक कीअनीता ’ उपन्यास की नायिका अपने पति के सुख-सुविधा से भरे घर को छोड़ देना चाहती है क्योंकि वहां उसका दम घुटता है और लगता है कि वह बिना जिए ही मर जाएगी, वह कुछ ही दिन जी कर देखना चाहती है, इसलिए पति से अलग रहना चाहती है. दरअसल या उसके अपने अस्तित्व की खोज का ही प्रयास है।

एकता उपन्यास की एकता, जिसने रघु से प्रेम विवाह किया है, अपने पति को तब छोड़ देती है जब उसे महसूस होता है कि दोनों के बीच प्रेम कब का खत्म हो चुका है अपनी सहेली प्रिया के पूछने पर वह स्वीकार करती है कि रघु से अलग होने का निर्णय कम तकलीफदेह नहीं था, अमृता प्रीतम की नायिकाएं समाज की जड़ रूट परंपराओं से टकराती है और रीति- रिवाजों के नाम पर अपनी इच्छाओं की बलि नहीं देती, अमृता प्रीतम ने नारी को एक वस्तु ना मानकर एक व्यक्तित्व मानने का प्रयास किया है।

नासिरा शर्मा ने रूढ़िवादी और विद्रोही स्त्री चरित्र की परिकल्पना शाल्मली के रूप में की है। वह विवाह के निर्णय से लेकर आज तक समाज की मर्यादाओं का निर्वाह करती है। पढ़ने की शौकीन शाल्मली विवाह ओपेरा प्रशासनिक सेवा में चयन के बाद भी घर-परिवार की मर्यादाओं को ओढ़े रहती है किंतु प्रत्येक वस्तु के लिए पति के आगे हाथ पसारने के संदर्भ में खुला विरोध करती है। ‘उम्र एक गलियारे की’(शशि प्रभा शास्त्री) की नायिका सुनंदा परंपरागत एवं विद्रोही स्त्री है। वह भारतीय परंपराओं का निर्वाह करती है, वही आत्मबोध से परिपूर्ण है। शेषयात्रा(उषा प्रियंवदा) की अनुष्का, शिक्षित पारंपरिक एवं विद्रोही हैं इसी चेतना के परिप्रेक्ष्य में इन चरित्रों स्त्री चेतना के विकास के समानांतर भारतीय संस्कार एवं परंपराएं भी चरित्र निर्माण त्रि शक्ति बनती है। इसी क्रम में ‘मेरे संधिपत्र’(सूर्यबाला) कर्करेखा(शशि प्रभा शास्त्री) अग्निगर्भा (नागर) आदि की नायिकाएं सदैव अजनबी बनी रहती है, अकेलेपन से परेशान रहती हैं या फिर अपने को निरर्थक मान लेती है, इनके लिए विवाह आपस का एडजस्टमेंट भर है, कर्करेखा की तनु अकेलेपन में ही जिंदगी गुजार देती है अग्निगर्भा की सीता मात्र पारिवारिक एवं

आर्थिक भोग का साधन है वास्तव में आज बढ़ते अजनबी पर, विवाह संबंधों में शिथिलता और परिवार एवं समाज में स्त्री की स्थिति एवं चेतना का किंचित विकास दिखाई देता है।

कृष्णा सोबती के स्त्री पात्र अपने आप में एक पहेली हैं. स्त्री संघर्षशील दबंग और विद्रोही है वह अपने परिवार के हर संभव, हर पहलू पर सोचती है एक तरफ तो' मित्रो मरजानी' की मित्रों अपनी दैहिक शक्ति को इन्हीं इलही ताकत कहकर किसी से डरती नहीं है उसके संतान ना होने की स्थिति में जब उसकी जेठानी के बच्चा होने वाला होता है तो उसके हृदय में एक बार तो खुशी की लहर दौड़ जाती है किंतु दूसरे ही पल उसमें आत्मग्लानि पैदा हो जाती है तो वह अपनी सास से कहती है की 'अम्मा अपने लड़के को किसी वैद्य- हकीम को दिखाओ इस नगोड़े बुत में कोई हरकत हो सके। कृष्णा सोबती के उपन्यासों में पतिब्रता नारी के साथ वेश्या जैसी नारी पात्रों का चित्रण किया गया है। 'डार से बिछड़ी' उपन्यास में पाशों दीवानजी की पत्नी मालन बन कर घर आई। तो 'जिंदगीनामा' में बड़ी शाहनी अपने गौरव गरिमा के अनुकूल उदार, सहृदय, सहिष्णु, धार्मिक,परिश्रमी व्यव्हार कुशल और आदर्श पत्नी हैं।

मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में नारी अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए एक शस्त्र विहीन युद्ध में सलाम दिखाई पड़ती है। अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित करने की छटपटाहट और ना पाने की विवशता का एहसास आपकी कहानियों का विषय है मन्नू भंडारी ने स्वयं एक साक्षात्कार में स्वीकार किया है की - 'मैं नारी को उसकी घुटन से मुक्त कराना चाहती हूं इसमें बोल्डनेस देखना चाहती हूं' किंतु 'यही सच है' कि दीपा इंटरव्यू के लिए अकेली जाती हुई डरती है 'एक बार और' की बिन्नी कुञ्ज से टूट कर नंदन से जुड़ने की प्रक्रिया में अत्यंत निरीह प्रतीत होती है 'आते जाते यायावर' अक्की मिताली पुरुष के साथ ही चाह के कारण बार-बार चली जाती है, तिहरी भूमिका निभाते 'ऐशाने आकाश नाई' की लेखा के स्वास्थ्य पर गहरा असर पड़ता है। गीत का चुंबन की कुनिका निखिल के प्रति समर्पित होने को छटपटाती है। 'एक इंच मुस्कान' की रंजना गर्भपात के लिए विवश की जाने के कारण अमर से कट जाती है 'आपका बंटी ' की शकुन बेटे बंटी को खोकर भी डॉक्टर जोशी के साथ असंतोष की स्थिति में नहीं है।

प्रभा खेतान ने अपने उपन्यास 'आओ पेपे घर चलें' मैं अमेरिका में रहते हुए अपने अनुभव के आधार पर अमरीकी नारी के जीवन के दुख और पीड़ा को चित्रित किया है। भोग विलास में डूबी अमेरिकी औरतों के भीतर कितना अकेलापन, पीड़ा है, 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में पुरुषों के वर्चस्व के मध्य एक स्त्री के व्यवसाय शुरू कर आत्मनिर्भर बनने एवं स्वयं को अलग पहचान बनाने की कथा है।

ममता कालिया के उपन्यास में ' बेघर'और 'एक पत्नी के नोट्स 'में एक मध्यम वर्गीय पढ़ी लिखी महिला का भी अपने पति द्वारा एक सामान्य औरत की तरह ट्रीट किया जाना प्रगतिशील और पढ़े लिखे वर्ग को बेनकाब करता है। कवि और लेखिका रश्मि भारद्वाज की कवितायों में स्त्री पीड़ा नजर आती है वे स्त्री मुद्दे, युवा स्त्रियों की चुनौतियों और उनके अनुभव को अपनी कविताओं के बनाते हैं ममता कालिया ने नारी जीवन को केंद्र मानकर कहानिया लिखी है इन्होने नारी के दुःख दर्द को कहानी में लेने का प्रयास किया है।आप के उपन्यासों में 'बेघर' और 'एक पत्नी के नोट्स' में एक मध्यमवर्गीय पढ़ी-लिखी महिला का अपने पति द्वारा एक सामान्य औरत की तरह ट्रीट किया जाना, प्रगतिशील और पढ़े-लिखे वर्ग को बेनक़ाब करता है। और चित्रा मुद्गल के 'एक जमीन अपनी 'उपन्यास

में बम्बई के महानगरीय परिवेश में विज्ञापन जगत के ग्लैमर,मूल्यहीन प्रतियोगिता के मध्य स्त्री स्वतंत्रता एवं स्त्री पहचान का विषय उठाया गया है।

उपसंहार

आज के कथा लेखन में एक ऐसी स्त्री का चेहरा सामने आता है जो तमाम वर्जनाओं को नकारती है पहले की तरह वह बंधनों में सिमटी लाज शर्म से ढकी नहीं है वह प्रेम और सेक्स को लेकर गिल्ट की शिकार नहीं है नायिकाएं सिगरेट शराब पीती हैं, क्लबों में जाती हैं उनके भीतर यौन संबंधों को लेकर भी झिझक नहीं है आज साहित्य की विभिन्न विधाओं में महिलाओं से कोई क्षेत्र अछूता नहीं रहा स्वतंत्रता के बाद नारी लेखन में मुक्त के स्वर उभरे वह नारी जिसे पुरुषों ने सती सावित्री का चोला पहना रखा है। नारी एक स्वप्नलोक में बसी एक देह थी एक ऐसी बेबस नारी थी जिसके अंदर कोई भावना नहीं होती, जो कभी किसी की आशा नहीं करती आज के दौर में भारतीय संस्कृत में नारी को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। कृष्णा सोबती की स्त्री ने अपने को जाने के लिए अपने को जताने के लिए अपने से आगे आने वाली पीढ़ी के मार्गदर्शन के लिए विरोध तो होगा ही, दूरियां तो तैयार होगी ही वैसे प्याले में जबरन फिर आ जाएंगे ही भीड़ के रेलो खिलकर डील कर चलना है आगे बढ़ना है और तलवार की धार लहूलुहान कदमों की छाप छोड़ते जाना भी है।

कविता का जितना उपयोग स्त्रियों ने किया इतना पुरुष नहीं कर पाए, स्त्रियों के पास हमेशा बहुत सी ऐसी बातें रही है सबके सामने खुलकर नहीं कह पाए. ऐसे में उनके लिए अनकही बातों को कहने का सबसे अच्छा माध्यम बनी कविताएं.कवयित्री अनामिका ने एक नई प्रथा को जन्म देते हुए पहली महिला के कवयित्री रूप में साहित्य अकादमी पुरस्कार जीत लिया अनामिका ने अपनी कविताओं में घर की रसोई से लेकर दूसरों के खेतों में काम करने वाली महिलाओं तक के अंक एहसास लिखें.अनामिका एक कहानीकार, उपन्यासकार तथा अनुवादक भी है इन्होंने खुरदरी हथेलियां, गलत पते की छुट्टी दूब-धान, बीजाक्षर आदि 'टोकरी में दिगंत'; थेरीगाथा उन स्त्रियों की अभिव्यक्ति है,जो हर तबके, ग्रामीण, पिछड़ी जातियों,आदिवासी,समाज के अभाव क्षेत्रों ग्रस्त से संबंध रखती है आधुनिक उपन्यासों में चित्रित स्त्री चरित्रों में व्यक्तित्व रुचि, महत्वाकांक्षा, स्वतंत्र चेतना, अस्तित्व और अस्मिता की पहचान से कहीं अधिक जीवन के दुखों एवं संघर्षों से परिपूर्ण है और उसके समानांतर चिड़ियों का मोह भंग, टूट,विघटन, वर्ग संघर्ष की समांतर चेतना एवं जीवन का अर्थ-बोध उकेरा गया है। किसी भी समाज की सामाजिक व्यवस्था ही समाज की उन्नति-अवनति का करक होती है ।व्यवस्था बदलेगी तभी समाज बदलेगा, समाज की सोच बदलेगी तो स्त्रियों की दशा बदलेगी।

कितना सुन्दर ,कितना कोमल,कितना निर्मल है ,
कल-कल करती झरने जैसे,तो कभी गंगा जल है ,
नारी तू कल भी सुन्दर थी ,आज भी है,
सुन्दर तेरा आने वाला हर एक कल है।

सन्दर्भ- ग्रन्थ :

1 आज-कल (साहित्य और संस्कृति)मासिक ,अक्तूबर २०१५ संपादक ,फरहत परवीन .

2 .कृष्णा सोबती का कथा साहित्य ,महेश आलोक,शिप्रा प्रकाशन भजनपुरा,दिल्ली

3 .आधुनिक समाज की नारी चेतना -डॉ.सुशील वर्मा ,आशा पब्लिशिंग कंपनी ,आगरा

4 .न्यू इंडिया समाचार .नवंबर २०२१

5 .हिंदी साहित्य का अर्वाचीन इतिहास ,डॉ .राजेश श्रीवास्तव .कैलाश पुस्तक सदन

6 https://jankriti.com/sahitya-str-asmita/

■ ■ ■